© 2015 IJSRST | Volume 1 | Issue 5 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

# आचार्य रामजी उपाध्याय की नाट्य चातुरी

**रामाश्रय राजभर**
**शोधच्छात्र**
**संस्कृत विभाग, कला संकाय**
**काशी हिन्दू विश्वविद्यालय**

संस्कृत साहित्य की अजस्त्र धारा किसी युग में व्याहत नहीं हुई, स्वातन्त्रयोत्तर काल में व्याकरण, काव्यग्रन्थ तथा अन्य विविध शास्त्रों की रचना परिणाम की दृष्टि से श्रीवृद्धि को प्राप्त हुई है। आधुनिक काल का संस्कृत नाट्य साहित्य, जिसमें रुपक के भेद नाटक प्रहसनादि काव्य रुप समाहित हैं। जिसमें रामायण, महाभारत आदि उपजीव्य कथानकों पर आधारित एवं स्वतंत्रता संग्राम को समर्थन तथा बल देने के लिए महापुरुषों के चरित को आधार बनाया गया।

आचार्य रामजी उपाध्याय 20वीं सदी के आलोचक एवं उच्चकोटि के नाटककार हैं। नाट्य साहित्य के सम्प्रवर्तन एवं सम्वर्धन में उपाध्याय जी की रचनाधर्मिता मुखर होकर सामने आई है। संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्यकारों में उपाध्याय जी ललित तथा रुचिर काव्य के स्रष्टा, सनातन धर्म के उत्कृष्ट वक्ता एवं व्याख्याता के रुप में प्रसिद्ध है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संस्कृत भाषा में जिन मूर्धन्य उद्भट कवियों ने काव्य की विविध विधाओं में काव्य का सर्जन किया है, उनमें उपाध्याय जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी प्रमुख नाट्य कृतियाँ सीताभ्युदयम, कैकेयीविजयम् एवं अशोकविजयम् आदि है।
आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में नाट्य प्रयोजनों की चर्चा में कहा है–

**धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्।**
**लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति।।**

ना0शा0 1/115

**'काव्येषु नाटकं रम्यम्'** यह आभाणक प्रसिद्ध है तथापि माघ की उक्ति अपनी चरितार्थता को प्राप्त करती है।

**क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैतितदेव रूपं रमणीयतायाः।**

(शिशुपालवधम् 4/17)2

नाटककार ने इन्हीं सारतत्वों का अनुसरण कर रामकथा को उपजीव्य बनाकर अपने नाट्यकौशल को प्रदर्शित किया है। उपाध्याय जी ने अपनी नाट्यकला से जो कीर्ति अर्जित की है, वह वास्तव में उल्लेखनीय है। भारतीय संस्कृति के रम्य रूप को चित्रित करने में उपाध्याय जी पूर्ण सफल रहे हैं। अतः यदि कहा जाये कि उपाध्याय जी के नाटकों में समस्त गुणों का पूर्ण समावेश है जो नाटक में अपेक्षित होते हैं तो अनुचित नहीं होगा।

संस्कृत नाटक के क्षितिज पर उपाध्याय जी का उदय नाटक और रंगमंच की दृष्टि से श्रेयस्कर है। उपाध्याय जी ने अपने नाटकों में घटना संयोजन मे असाधारण कुशलता प्रदर्शित की है। घटनाओं का संयोजन इस प्रकार किया गया है उनमें पूर्णरूप से स्वाभाविकता ज्ञात होती है।

वाल्मीकि रामायण (उत्तरकाण्ड) सीताभ्युदयम् नाटक का उपजीव्य आधार है यह नाटक छः अंकों में विभाजित है। पूर्ववर्ती रामकथाओं में राम के लंकाविजय के अनन्तर अयोध्या में सीता–विषयक प्रवाद फैलता है, जिससे राम गर्भवती सीता को वाल्मीकि आश्रम के समीप असहाय छोड़वा देते है।
भवभूति ने सीता प्रवाद की तुलना पागल कुत्ते के विष से की है–

**हा हा धिक्! परगृहवासदूषणं**
**यद्वैह्याः प्रशमितमद्भुतैरुपायैः।**
**एतत्तत्पुनरपि दैवदुर्विपाका–**
**दार्लर्कं विषमिव सर्वतः प्रसृप्तम्।।**[3]

सीता की परित्याग कथा को रघुवंश में कालिदास, उत्तररामचरितम् में भवभूति, तथा कुन्दमाला में दिङ्नाग तथा अन्य कवियों ने उपजीव्य बनाया है, परन्तु तुलसीदास ने रामचरितमानस में सीता परित्याग की कल्पना भी नहीं की है।

उपाध्याय जी ने मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए वक्रोक्ति प्रपन्न कविमार्ग से परिष्कार करके सीता और राम के चरित्र को लोकनिर्माण की दिशा में अनुकरणीय बनाया है। सीताभ्युदय नाटक द्वारा सीता परित्याग की कथा को अभिनव परिष्कार सज्जा से मण्डित किया गया है। नाटककार ने घटना संयोजन में असाधारण कुशलता प्रदर्शित की है। घटनाओं का संयोजन स्वाभाविक कथानक के विकास में पूर्ण सहयोग देती हैं।

घटनाएँ बहुत विचारपूर्वक यथा स्थान रखी गई हैः अतः नाट्य की गति स्वाभाविक और अविच्छिन्न है। जैसे– भुगुशाप, शाप के कारण सीता राम का वियोग, अभुक्तमूल नक्षत्र योजना, इस योजना से सीता परित्याग का प्रक्षालन, सीता के पाताल लोक की उपलब्धि आदि सभी घटनाएँ तार्किक एवं सुसंवद्ध हो गई हैं।

नाटककार ने अभुक्तमूल नक्षत्र द्वारा सीता की युगल पुत्रोत्पत्ति की अभिनव कल्पना से सीता एवं राम के चरित्र को भ्रंश होने से बचाया है। सीताभ्युदय नाटक में ब्रह्मा ने स्वयं कहा है[4]–

**''यथाधिकारं मया पुत्र–प्रसूतिकालोऽभुक्तमूले विहितः। अभुक्त मूले जातस्य शिशोर्मुखं द्वादशवर्षाणि पित्रादिकुटुम्बजनैर्न द्रष्टव्यं महाविपत्ति जननादिति भवान् रामं सन्दिशतु। तदनन्तरं स्वयमेव रामो मुनेराश्रमे तां न्यासीकरिष्यति।'**

जिस प्रकार कालिदास के 'दुर्वासा शाप की योजना' से दुष्यन्त का चरित्र धवलित हो जाता है उसी प्रकार रामकथा सम्बन्धित पूर्ववर्ती कथाओं से जो सीता और राम के औदात्य में कलंक लगे हैं उनका परिहार **'अभुक्तमूल–प्रसव–योजना'** से पूर्णतया हो जाता है।

सीता की लंका में अग्नि परीक्षा के उपरान्त पुनः अयोध्या में सतीत्व का प्रमाण मांगा जाता है जिसे प्रमाणित कर वह पाताल में प्रवेश कर पाती है। पाताल में रहते हुए सीता की क्या जीवन चर्या है, इस विषय में रामकथा को उपजीवन बनाकर रचना करने वाले कथाकार मौन हैं। रामजी उपाध्याय ने इस मौन व्रत को अपने नाट्यकला से तोड़ दिया है। सीताभ्युदयम् सीता की उपलब्धियों की गाथा है। सीता स्वयं कहती है[5]–

**'अत्रभवत्याः प्रसादेन विश्वलोकं पावयितुं व्रतं मया घृतम्। एतदर्थं मुनेर्दीक्षां गृहीत्वा काषायवासिनी संवृत्ताहम्। दीक्षानुवर्तनदिशि मया नागलोकं प्रतिनिवृत्य ऋषिचर्यानुष्ठास्यते।**

कैकेयीविजयम् की प्रत्येक घटना द्वारा नाटककार ने अपनी नाट्यकला से कैकेयी की सच्चरित्रता सामाजिकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

**सीता के पाताललोक की उपलब्धियों की चर्चा स्वयं ब्रह्मा द्वारा नाटककार ने किया है–**
**सा पाताललोकं गता रामचरितादर्शं विश्वे प्रसारयितुमृषिचर्यां चरन्ती विश्वलोकानाराधयिष्यति।[6]**

कैकेयीविजय नाटक में नाटककार ने कैकेयी के उदात्त चरित्र. का वर्णन किया है जिसका उपजीव्य पौराणिक आख्यान है। यह छः अंको में विभाजित नाटक है। रामकाव्य परम्परा में रामवन गमन का कारण कैकेयी को ठहराया गया है। परन्तु प्रश्न यह है कि जिस कैकेयी के पिता महान धार्मिक, पुत्र विश्वंभर भरत, पति विश्वविख्यात् सम्राट हो वह कैकेयी कैसे भ्रष्ट हो सकती है? यह मान भी लेते हैं कि भरत को राजा बनाने के लिए कैकेयी ने रामवन गमन कराया, तो चौदह वर्ष ही क्यों, आजीवन क्यों नही?

कैकेयी ने इस अपयश को दूर करने के लिए नाटककार ने अपनी नाट्य कला से निम्न बिन्दुओं पर विचार किया है–

1. श्रवण हत्या पर ऋषि दम्पत्ति का दशरथ को शाप– **(दशरथाय न सूचितं मया कथं ममेव तस्येहलोकलीलासमाप्तिर्भविष्यति।)**
2. दशरथ की ऋषि दम्पत्ति से प्रतिज्ञा– (अतः परं सततं रघुवंशीया राजानः पुत्रपौत्रपरम्परया दुष्कृतां रक्षसां प्रणाशाय प्राणपणेन प्रवर्तिष्यन्त इति।)[8]
3. दण्डकारण्य प्रतिनिधि द्वारा रामको माँगना– अपरं च तत्रास्ते दण्डकारण्यवासिनां मुनीनां यांचा। तेषां प्रतिनिधिमण्डलं विश्वामित्र इव राक्षसोपप्लवादात्मरक्षायै रामं याचते।[9]

कैकेयी ने लोकहित की योजना में दोनों वरो का भुगतान दशरथ से कराया। प्रथम वर के रुप में दशरथ की प्रतिज्ञा और दण्डकारण्य की समस्या के निवारणार्थ कैकेयी ने राम को दण्डकारण्य भेजा तथा द्वितीय वर के रुप में भरत द्वारा राम के प्रतिनिधि रुप में अयोध्या का 14 वर्षों तक संचालन कराया।

एकोपायो देवर्षिमानवानामायोध्यकानां च सर्वेषां समं स्वार्थसिद्धये प्रपक्ष्यामि। महाराजेन प्रत्तं वरदानिकं क्षणेऽस्मिन् कृतार्थी क्रियते। प्रथमेन वरेण महाराजो दण्डकारण्ये देवर्षियां रक्षणाय कुलधुर्यं रामं नियोजयतु। द्वितीयेन चायोध्यायां त्रैलोक्यधरणक्षमस्य, यौवनपदवीमारुढस्य रघुकुलतिलकस्य रामस्य चरणपादुका अभिषिच्य भरतस्तदधीनमात्मानं व्यवस्येत्।

नाटककार ने अपनी अभिनव नाट्यकला के माध्यम से कैकेयी की निर्दोषिता प्रस्तावना में ही स्पष्ट कर देते है।[11]

''अथ दण्डकारण्येपुरा राणवादि–राक्षसेरुद्वेजितानां देवर्षीणां परित्राणाय ब्रह्मा विष्णुभूतं रामं तत्र प्रेषितुकामो वभूव। रामः स्वपित्रे महाराजदशरथाय प्राणेभ्योऽपि बलवत्तरं रुरुचे। तस्य वनगमनं दशरथास्या भीष्टं नासीत्। ब्रह्मा स्वकार्यं सम्पादयितुमियेष। एतदर्थंस मन्थरामा दौत्येन राजपत्नी कैकेयीं समादिशत्– 'देशहितं लोकहितं चावेक्ष्यात्रभवती मम कार्यभरं युक्तियुक्तं निर्वहतु। नान्योऽपरः कश्चित्। प्रकरणेऽस्मिन् समर्थ इति।

**निष्कर्ष :**

सीताभ्युदय एवं कैकेयीविजयम् एक नवीन प्रकार की रचना है। ये नाट्यग्रन्थ नाट्यशास्त्र के नियमों के पूर्णतः अनुरुप नहीं है, क्योंकि इसकी रचना कोई नाट्यशास्त्रीय नियमों को मानकर चलने वाली नहीं बल्कि मानवमूल्य की रक्षा एवं सामाजिक समन्वय के लिए हुई है। यद्यपि उपाध्याय जी नाट्यशास्त्र के नियमों के ज्ञाता थे, तथापि नवीन प्रयोग कर अपनी वैयक्तिक प्रतिभा प्रदर्शित करने का सफल प्रयास किया है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–**


1. नाट्यशास्त्र–1/115 भरमुनि, काव्यमाला संस्करण बम्बई।
2. शिशुपालवधम् 4/17 साभार, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, आचार्य कपिलदेव द्विवेदी प्रकाशक रामनारायण लाल विजय कुमार इलाहाबाद पृष्ठ संख्या– 204
3. उत्तररामचरितम्– 1/40 भवभूति, संपादक, पं0 सुधीर कुमार पाठक प्रकाशन सपना अशोक वाराणसी।
4. सीताभ्युदयम् प्रथम अंक पृ0 4 आचार्य रामजी, उपाध्याय, प्रकाशक, भारतीय संस्कृति संस्थानम्, प्रथम अंक पृ0 संख्या 4
5. सीता.... चतुर्थ पृ0 सं0 20
6. सीता पृ0 सं0 7
7. कैकेयी विजयम् द्वितीय पृ0 14, आचार्य रामजी, उपाध्याय, प्रकाशक, भारतीय संस्कृति संस्थानम्, प्रथम अंक पृ0 संख्या 4
8. वही ..... तृतीय पृ0 17
9. कैकेयी विजयम् तृतीय पृ0 17
10. कैकेयी विजयम् चतुर्थ पृ0 21
11. कैकेयी विजयम् प्रथम अंक प्रस्तावना